



इतिहास में मेरी शुरु से रूचि रही है। मुझे पुरानी चीजों के बारे में जानना काफी अच्छा लगता है। याक्षिणी के बारे में मुझे अपने स्कूल के शिक्षकों से जानकारी मिली। फिर मैंने इंटरनेट खंगाला, इससे मेरा और जानवर्धन हुआ।



साल 2011 में मैं पहली बार पटना संग्रहालय अपने परिवार के साथ आई थी। यहाँ पर मैंने याक्षिणी की प्रतिमा देखी। इसके बाद इस बारे में मैंने अपने पापा से बात की। उन्होंने मुझे काफी जानकारी दी।

बच्चों का आत्मविश्वास

विरासत की रक्षा के लिए युवाओं को प्रेरित करने का यह एक अच्छा प्रयास है। इन्हें प्रेरित कर के हमें भविष्य में काफी फायदा होगा। ऐसे कार्यक्रमों से स्कूल, कॉलेज के छात्र-छात्राओं को अपनी विरासत के प्रति रूचि बढ़ेगी। बाद में वो इसे संभाल सकेंगे। युवाओं में चीजों को समझने और उसे ग्रहण करने की अद्भुत शक्ति रहती है। साथ ही इस तरह के कार्यक्रमों से बच्चों का आत्मविश्वास भी काफी बढ़ता है। उनके बोलने व लिखने की शैली भी काफी हद तक सुधर जाती है। वो अंतर्मुखी नहीं रहते हैं।

डॉ. उमेश चंद्र द्विवेदी
पूर्व निदेशक संग्रहालय, बिहार

जज की राय

विरासतों के प्रति जागरूकता

प्राचीन मूर्तियों के बारे में जागरूक करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। ऐसे कार्यक्रमों से अपनी विरासतों के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ेगी। विरासत को बचाने के अब तक जितने भी कार्यक्रम हुए हैं उनमें यह सबसे बढ़िया है। इससे बच्चों की बोलने, लिखने व सुनने की क्षमता बेहतर होती है।

डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा, पूर्व निदेशक, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना



पापा ने ग्रंथों से कई सारी कहानियाँ इनके बारे में बताईं। इससे मेरी रूचि भारतीय इतिहास के प्रति जागृत होने लगी। फिर मैंने कई सारे पत्र-पत्रिकाएँ और जानकारी



जुटाने के लिए पढ़ी। प्रताप (शहीद राजेंद्र सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय)



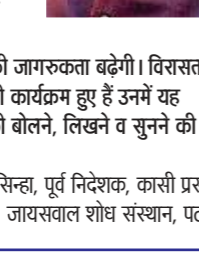
पटना संग्रहालय आकर ही पहली बार याक्षिणी के बारे में जाना था। फिर अपनी स्कूल की लाइब्रेरी में कई सारी किताबों को पढ़ने के बाद और जानकारियाँ जुटाईं। साथ ही साथ स्कूल के कई शिक्षकों खासकर इतिहास के शिक्षकों ने ज्यादा अच्छे तरीके से मुझे समझाया।



शांतिनी (कक्षा 10, आर्मी पब्लिक स्कूल)



याक्षिणी के बारे में मुझे सर्वप्रथम अखबारों से जानकारी मिली। साल 2012 से मैं इस बारे में जानकारी जुटा रहा हूँ। पहली बार 2013 में पटना संग्रहालय में इनकी प्रतिमा को देखा था।



केशव आर्या (राम मोहन रॉय सेमिनरी स्कूल)



विश्व विख्यात कलाकृतियों में से एक चामर ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी वर्ष पर आयोजित आलेख प्रतियोगिता में कार्मल स्कूल की अमृता भारद्वाज को प्रथम, आर्मी पब्लिक स्कूल की शालिनी को द्वितीय व कार्मल स्कूल की ही हर्षा को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। पटना संग्रहालय में कला संस्कृति एवं युवा विभाग, पटना संग्रहालय व फाउंडेशन फॉर आर्ट, कल्चर, एथिक्स एंड साइंस एवं दैनिक जागरण के संयुक्त तत्वावधान में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन पटना संग्रहालय के संग्रहालयध्यक्ष डॉ. विजय कुमार, एफसीईएस की सचिव अभिनेत्री सुनीता भारती व संग्रहालय के उप संग्रहालयध्यक्ष डॉ. शंकर सुमन ने दीप प्रज्वलित कर संयुक्त रूप से किया। निर्णायक मंडल में शामिल संग्रहालय के पूर्व निदेशक डॉ. उमेश चंद्र द्विवेदी, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा, व पटना संग्रहालय के शोध निदेशक डॉ. शिव कुमार मिश्र शामिल थे। मुख्य अतिथि पटना विश्व विद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वीके जमुआर ने विजेता पुरस्कृत छात्रों को ट्राफी और प्रमाण पत्र दिए। इसके साथ ही सभी छात्रों को सहभागिता प्रमाण पत्र दिया गया।

चामर ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी वर्ष



पटना संग्रहालय में बुधवार को चामर ग्राहिणी यक्षिणी : परिचय, एतिहासिकता और कला पक्ष विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने के बाद आयोजक मंडल के साथ सफल प्रतिभागी, निर्णायक मंडल।

द्वितीय पुरस्कार

कोई भी कलाकार जब अपने हाथ में कलम पकड़ता है तब सबसे पहला, जो चित्र वह बनाता है वह नारी का होता है। नारी, इस पूरे विश्व के रचयिता यानी ईश्वर की एक ऐसी कलाकृति है जिसके हर गुण एवं हर अंग में सुंदरता कूट-कूट कर भरि हुई है। नारी सृष्टि की अनुपम देवि है।

डॉ. शिव कुमार मिश्र

निबंध प्रतियोगिता

अब आप सब यही सोच रहे होंगे कि आखिर इस साधारण सी चुनाव पत्थर से बनी हुई याक्षिणी के ऊपर आज अचानक से यह भाषण, आलेख व वाद-विवाद आखिर क्यों?? तो जरा, मैं आपको बता दूँ कि ये कोई आम कलाकृति नहीं बल्कि ये मौय्य युगीन लोककला मुख्यतः एक ऐसी मूर्ति है जो कई हजार जब कोई चीज सुंदर होती है तब उसकी चर्चा महान व्यक्तियों के बीच होने लगती है। 'जिस तरह हरे की परख एक बोहरी को होती है। ठीक उसी प्रकार कलाकृति की परख एक कलाकार को होती है। कारल, वसुधारा, शरण ऐसे बहुत से लेखकों ने चामर ग्राहिणी यक्षिणी पे अपने कलम की नींव तोर डाली, किंतु यक्षिणी कि सुंदरता की वर्णन में सब असफल रहे इस ईसापूर्व तीसरी शताब्दी की इस प्रस्तर कलाकृति को ऐतिहासिकता, कलात्मकता और तकनीक का अध्ययन विश्व के सैकड़ों विद्वानों ने किया है, और यह पाया भी कि विशिष्ट कलाकृतियों के मुकाले चामर ग्राहिणी की मूर्ति श्रेष्ठ है।

आलेख : शालिनी कुमारी



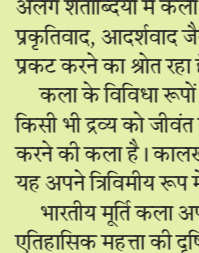
इंटरनेट के माध्यम से मुझे से याक्षिणी के बारे में पता चला था। फिर मैंने पटना संग्रहालय आकर इस बारे में और नजदीक से जानकारी मिली।



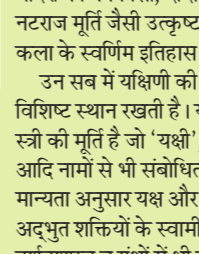
अभिनव आनंद (कक्षा 9, बीडी पब्लिक स्कूल)



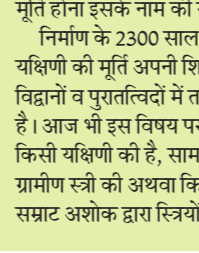
मेरे पापा ने एक बुकलेट लाया था मुझे याक्षिणी के बारे में उसी से जानकारी मिली। अभी उनका शताब्दी वर्ष भी आ रहा है इसलिए और जानकारी विभिन्न अखबारों और



आदित्य नारायण सिंह (कक्षा, 9, बीडी पब्लिक स्कूल)



पटना संग्रहालय में सबसे पहले याक्षिणी के बारे में जानकारी मिली। कक्षा छह में मैंने पहली बार इस बारे में अपनी स्कूली किताबों में पढ़ा था फिर जब संग्रहालय



साक्षी सिंह (कक्षा 10, केंद्रीय विद्यालय)



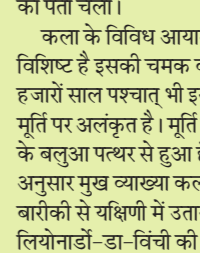
आई तो सबसे पहले इस प्रतिमा को देखा। स्कूली शिक्षकों ने ज्यादा जानकारी देने में मदद की।



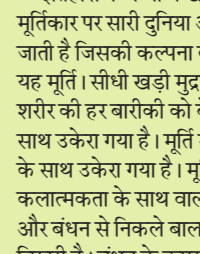
इस बारे में मुझे सबसे पहले इंटरनेट पर जानकारी मिली। फिर कई सारे पत्र-पत्रिकाओं को मैंने पढ़ा जिसमें इस बारे में विस्तार से बताया गया था। यह हमारे राज्य के लिए गौरव की बात है यहां यह प्रतिमा मिली। सरकार को इसके व्यापार प्रचार करना चाहिए।



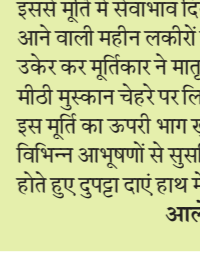
जब मैंने इस प्रतियोगिता के बारे में जाना तब ही याक्षिणी के बारे में भी जाना। फिर मैंने कई सारे वेबसाइट्स, किताबें आदि का उपयोग कर के याक्षिणी के बारे में



जर्जूरी जानकारियाँ जुटाईं। कनिज फातिमा



याक्षिणी के बारे में अपने कॉलेज के शिक्षकों से जानकारी मिली। खासकर इतिहास के शिक्षक ने कई उपयोगी बातें बताईं। फिर मैंने इंटरनेट के प्रयोग



से अन्य जानकारीयाँ इकट्ठा की। माया कुमारी (कक्षा, 11, जेडी विमर्स कॉलेज)



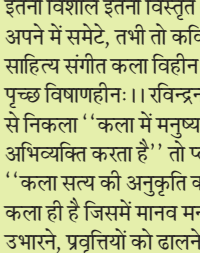
शुभांजलि सिंह (कक्षा 11, कार्मल स्कूल)



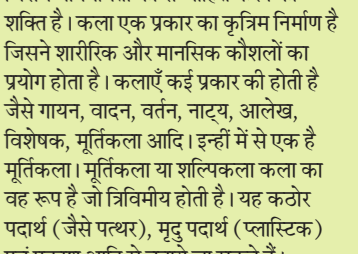
कला को शब्दों में वर्णित कर पाना कठिन है किंतु फिर भी मानव ने कहा है कि कला मानव मन के सर्वत्र



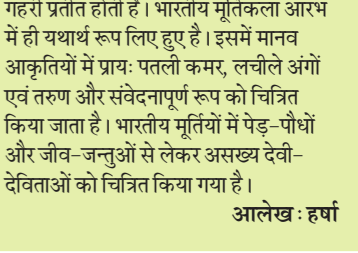
तृतीय पुरस्कार



कला, मैथिलीशरण गुप्त जी के शब्दों में 'अभिव्यक्ति की कृशाल शक्ति को ही तो कला कहते हैं।' जीवन, ऊर्जा का महासागर है। कला जीवन को सत्यम, शिवम, सुन्दरम से समन्वित करती है। कला उस शक्तिज की भाँति है जिसका छोर नहीं, इतनी विशाल इतनी विस्तृत अनेक विधाओं को अपने में समेटे, तभी तो कवि मन कह उठा- साहित्य संगीत कला विहीन : साक्षात् पशु: पुच्छ विषण्विहीन:। रविन्द्रनाथ ठाकुर के मुख से निकला 'कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है' तो प्लेटो ने कहा- 'कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।' कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएँ उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने, अभिरूचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है। मनोरंजन, सौन्दर्य, प्रवाह, उल्लास गढ़ी यह प्राचीन मूर्ति है।' व इस मूर्ति पर तत्कालीन यूनानी कला का प्रभाव भी मानते हैं।



इतिहास के पन्नों में खोल उस महान मूर्तिकार पर सारी दुनिया आश्चर्यचकित रह जाती है जिसकी कल्पना का अप्रतिम परिणाम है यह मूर्ति। सीधी खड़ी मुद्रा वाली इस मूर्ति में स्त्री शरीर की हर बारीकी को बेहद खूबसूरती के साथ उकेरा गया है। मूर्ति में बड़ी ही कलात्मकता के साथ उकेरा गया है। मूर्ति में बड़ी ही कलात्मकता के साथ वालों को बाँधा गया है और बंधन से निकले बाल लटे बने चेहरे पर विखरी है। बंधन के ऊपर मोतियों की लड़ी लटकती है। मूर्ति में सुंदरता, मातृत्व व सेवा भाव दिखाता है। सुंदरता को दर्शाते आकर्षक नैन-नक्शा व शारीरिक बनावट है। हल्के उठे दारों पाँव से चामर डुलाने की अभिव्यक्ति होती है। इससे मूर्ति में सेवाभाव दिखाता है। प्रसव पश्चात् आने वाली महीन लकीरों को मूर्ति के पेट पर उकेर कर मूर्तिकार ने मातृत्व भाव दर्शाया है। मोटी मुस्कान चेहरे पर लिए 160 सेंटीमीटर की इस मूर्ति का ऊपरी भाग खुला है। संपूर्ण शरीर किसी आभूषणों से सुसज्जित है। दाढ़ कंधे से होते हुए दुपट्टा दाढ़ हाथ में अटका है।



आलेख : अमृता भारद्वाज